श्री लक्ष्मीनृसिंह सहस्रनाम स्तोत्रं

ॐ अस्य श्री लक्ष्मीनृसिंह दिव्य सहस्रनामस्तोत्रमहामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप्छंदः श्रीलक्ष्मीनृसिंह देवता क्ष्रौं इति बीजं श्रीं इति शक्तिः नखदंष्ट्रायुधायेति कीलकं मंत्रराज श्रीलक्ष्मीनृसिंह प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः |

ध्यानं |
सत्यज्ञानसुखस्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्यस्थितं
योगारूढमतिप्रसन्नवदनं भूषासहस्रोज्ज्वलं |
त्र्यक्षं चक्रपिनाकसाभयकरान्बिभ्राणमर्कच्छविं
छत्रीभूतफणींद्रमिंदुधवळं लक्ष्मीनृसिंहं भजे || 1

लक्ष्मी चारुकुचद्वंद्वकुंकुमांकितवक्षसे |
नमो नृसिंहनाथाय सर्वमंगळमूर्तये || 2

उपास्महे नृसिंहाख्यं ब्रह्म वेदांतगोचरं |
भूयोल्लासितसंसारच्छेदहेतुं जगद्गुरुं || 3

ब्रह्मोवाच |
ॐ नमो नारसिंहाय वज्रदंष्ट्राय वज्रिणे |
वज्रदेहाय वज्राय नमो वज्रनखाय च || 1 ||

वासुदेवाय वंद्याय वरदाय वरात्मने |
वरदाभयहस्ताय वराय वररूपिणे || 2 ||

वरेण्याय वरिष्ठाय श्रीवराय नमो नमः |
प्रह्लादवरदायैव प्रत्यक्षवरदाय च || 3 ||

परात्पराय पाराय पवित्राय पिनाकिने |
पावनाय प्रसन्नाय पाशिने पापहारिणे || 4 ||

पुरुष्टुताय पुण्याय पुरुहूताय ते नमः |
तत्पूरुषाय तथ्याय पुराणपुरुषाय च || 5 ||

पुरोधसे पूर्वजाय पुष्कराक्षाय ते नमः |
पुष्पहासाय हासाय महाहासाय शार्ङ्गिणे || 6 ||

सिंहराजाय सिंहाय जगद्व्यंग्याय ते नमः |
अट्टहासाय रोषाय ज्वालाहासाय ते नमः || 7 ||

भूतावासाय वासाय श्रीनिवासाय खड्गिने |
खड्गजिह्वाय सिंहाय खड्गवासाय ते नमः || 8 ||

नमो मूलाधिवासाय धर्मवासाय धर्मिणे |
धनंजयाय धन्याय नमो मृत्युंजयाय च || 9 ||

शुभंजयाय सूत्राय नमः शत्रुंजयाय च |
निरंजनाय नीराय निर्गुणाय गुणात्मने || 10 ||

निष्प्रपंचाय निर्वाणप्रदाय निबिडाय च |
निरालंबाय नीलाय निष्कळाय कळात्मने || 11 ||

निमेषाय निबंधाय निमेषगमनाय च | [** निबद्धाय **]
निर्द्वंद्वाय निराशाय निश्चयाय निजाय च || 12 ||

निर्मलाय निदानाय निर्मोहाय निराकृते |
नमो नित्याय सत्याय सत्कर्मनिरताय च || 13 ||

सत्यध्वजाय मुंजाय मुंजकेशाय केशिने |
हरिकेशाय केशाय गुडाकेशाय वै नमः || 14 ||

सुकेशायोर्ध्वकेशाय केशिसंहारकाय च |
जलेशाय स्थलेशाय पद्मेशायोग्ररूपिणे || 15 ||

पुष्पेशाय कुलेशाय केशवाय नमो नमः |
सूक्तिकर्णाय सूक्ताय रक्तजिह्वाय रागिणे || 16 ||

दीप्तरूपाय दीप्ताय प्रदीप्ताय प्रलोभिने |
प्रसन्नाय प्रबोधाय प्रभवे विभवे नमः || 17 ||

प्रभंजनाय पांथाय प्रमायप्रतिमाय च |
प्रकाशाय प्रतापाय प्रज्वलायोज्ज्वलाय च || 18 ||

ज्वालामालास्वरूपाय ज्वालजिह्वाय ज्वालिने |
महाज्वालाय कालाय कालमूर्तिधराय च || 19 ||

कालांतकाय कल्पाय कलनाय कलाय च |
कालचक्राय चक्राय षट्चक्राय च चक्रिणे || 20 ||

अक्रूराय कृतांताय विक्रमाय क्रमाय च |
कृत्तिने कृत्तिवासाय कृतघ्नाय कृतात्मने || 21 ||

संक्रमाय च क्रुद्धाय क्रांतलोकत्रयाय च |
अरूपाय सरूपाय हरये परमात्मने || 22 ||

अजयायादिदेवाय ह्यक्षयाय क्षयाय च |
अघोराय सुघोराय घोरघोरतराय च || 23 ||

नमोऽस्तु घोरवीर्याय लसद्घोराय ते नमः |
घोराध्यक्षाय दक्षाय दक्षिणार्हाय शंभवे || 24 ||

अमोघाय गुणौघाय ह्यनघायाघहारिणे |
मेघनादाय नादाय तुभ्यं मेघात्मने नमः || 25 || [** नाथाय **]

मेघवाहनरूपाय मेघश्यामाय मालिने |
व्यालयज्ञोपवीताय व्याघ्रदेहाय ते नमः || 26 ||

व्याघ्रपादाय ते व्याघ्रकर्मणे व्यापकाय च |
विकटास्याय वीर्याय विष्टरश्रवसे नमः || 27 ||

विकीर्णनखदंष्ट्राय नखदंष्ट्रायुधाय च |
विश्वक्सेनाय सेनाय विह्वलाय बलाय च || 28 ||

विरूपाक्षाय वीराय विशेषाक्षाय साक्षिणे |
वीतशोकाय वित्ताय विस्तीर्णवदनाय च || 29 ||

विधानाय विधेयाय विजयाय जयाय च |
विबुधाय विभावाय नमो विश्वंभराय च || 30 ||

वीतरागाय विप्राय विटंकनयनाय च |
विपुलाय विनीताय विश्वयोने नमो नमः || 31 ||

विडंबनाय वित्ताय विश्रुताय वियोनये |
विह्वलाय विवादाय नमो व्याहृतये नमः || 32 ||

विरासाय विकल्पाय महाकल्पाय ते नमः |
बहुकल्पाय कल्पाय कल्पातीताय शिल्पिने || 33 ||

कल्पनाय स्वरूपाय फणितल्पाय वै नमः |
तटित्प्रभाय ताक्ष्र्याय तरुणाय तरस्विने || 34 ||

रसनायांतरिक्षाय तापत्रयहराय च |
तारकाय तमोघ्नाय तत्त्वाय च तपस्विने || 35 ||

तक्षकाय तनुत्राय तटिते तरलाय च |
शतरूपाय शांताय शतधाराय ते नमः || 36 ||

शतपत्राय ताक्ष्र्याय स्थितये शांतमूर्तये |
शतक्रतुस्वरूपाय शाश्वताय शतात्मने || 37 ||

नमः सहस्रशिरसे सहस्रवदनाय च |
सहस्राक्षाय देवाय दिशश्रोत्राय ते नमः || 38 ||

नमः सहस्रजिह्वाय महाजिह्वाय ते नमः |
सहस्रनामधेयाय सहस्रजठराय च || 39 ||

सहस्रबाहवे तुभ्यं सहस्रचरणाय च |
सहस्रार्कप्रकाशाय सहस्रायुधधारिणे || 40 ||

नमः स्थूलाय सूक्ष्माय सुसूक्ष्माय नमो नमः |
सुक्षीणाय सुभिक्षाय सूराध्यक्षाय शौरिणे || 41 ||

धर्माध्यक्षाय धर्माय लोकाध्यक्षाय वै नमः |
प्रजाध्यक्षाय शिक्षाय विपक्षक्षयमूर्तये || 42 ||

कालाध्यक्षाय तीक्ष्णाय मूलाध्यक्षाय ते नमः |
अधोक्षजाय मित्राय सुमित्रवरुणाय च || 43 ||

शत्रुघ्नाय ह्यविघ्नाय विघ्नकोटिहराय च |
रक्षोघ्नाय मधुघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः || 44 ||

भूतपालाय भूताय भूतावासाय भूतिने |
भूतभेतालघाताय भूताधिपतये नमः || 45 ||

भूतग्रहविनाशाय भूतसंयमिने नमः |
महाभूताय भृगवे सर्वभूतात्मने नमः || 46 ||

सर्वारिष्टविनाशाय सर्वसंपत्कराय च |
सर्वाधाराय सर्वाय सर्वार्तिहरये नमः || 47 ||

सर्वदुःखप्रशांताय सर्वसौभाग्यदायिने |
सर्वज्ञायाप्यनंताय सर्वशक्तिधराय च || 48 ||

सर्वैश्वर्यप्रदात्रे च सर्वकार्यविधायिने |
सर्वज्वरविनाशाय सर्वरोगापहारिणे || 49 ||

सर्वाभिचारहंत्रे च सर्वोत्पातविघातिने |
पिंगाक्षायैकशृंगाय द्विशृंगाय मरीचये || 50 ||

बहुशृंगाय शृंगाय महाशृंगाय ते नमः |
मांगल्याय मनोज्ञाय मंतव्याय महात्मने || 51 ||

महादेवाय देवाय मातुलुंगधराय च |
महामायाप्रसूताय मायिने जलशायिने || 52 ||

महोदराय मंदाय मदनाय मदाय च |
मधुकैटभहंत्रे च माधवाय मुरारये || 53 ||

महावीर्याय धैर्याय चित्रवीर्याय ते नमः |
चित्रकर्माय चित्राय नमस्ते चित्रभानवे || 54 ||

मायातीताय मायाय महावीराय ते नमः |
महातेजाय बीजाय तेजोधाम्ने च बीजिने || 55 ||

तेजोमय नृसिंहाय तेजसांनिधये नमः |
महादंष्ट्राय दंष्ट्राय नमः पुष्टिकराय च || 56 ||

शिपिविष्टाय पुष्टाय तुष्टये परमेष्ठिने |
विशिष्टाय च शिष्टाय गरिष्ठायेष्टदायिने || 57 ||

नमो ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय तुष्टायामिततेजसे |
अष्टांगन्यस्तरूपाय सर्वदुष्टांतकाय च || 58 ||

वैकुंठाय विकुंठाय केशिकंठाय कंठिने |
कंठीरवाय लुंठाय निश्शठाय हठाय च || 59 ||

सत्त्वोद्रिक्ताय कृष्णाय रजोद्रिक्ताय वेधसे |
तमोद्रिक्ताय रुद्राय ऋग्यजुस्साममूर्तये || 60 ||

ऋतुध्वजाय कालाय मंत्रराजाय मंत्रिणे | [** राजाय **]
त्रिनेत्राय त्रिवर्गाय त्रिधाम्ने च त्रिशूलिने || 61 ||

त्रिकालज्ञानरूपाय त्रिदेहाय त्रिधात्मने |
नमस्त्रिमूर्तिवंद्याय त्रितत्त्वज्ञानिने नमः || 62 ||

अक्षोभ्यायानिरुद्धाय ह्यप्रमेयाय भानवे |
अमृताय ह्यनंताय ह्यमितायामराय च || 63 ||

अपमृत्युविनाशाय ह्यपस्मारविघातिने |
अन्नदायान्नरूपाय ह्यन्नायान्नभुजे नमः || 64 ||

आद्याय निरवद्याय वेद्यायाद्भुतकर्मणे |
सद्योजाताय संध्याय वैद्युताय नमो नमः || 65 ||

विद्यातीताय शुद्धाय रागतीताय रागिणे |
योगीश्वराय योगाय गोहिताय गवांपते || 66 ||

गंधर्वाय गभीराय गर्जितायोर्जिताय च |
पर्जन्याय प्रवृद्धाय प्रधानपुरुषाय च || 67 ||

पद्माभाय सुनाभाय पद्मनाभाय भासिने |
पद्मनेत्राय पद्माय पद्मायाः पतये नमः || 68 ||

पद्मोदराय पूताय पद्मकल्पोद्भवाय च |
नमो हृत्पद्मवासाय भूपद्मोद्धरणाय च || 69 ||

शब्दब्रह्मस्वरूपाय ब्रह्मरूपधराय च |
ब्रह्मणे ब्रह्मरूपाय ब्रह्मनेत्रे नमो नमः || 70 ||

ब्रह्मादये ब्राह्मणाय ब्रह्मब्रह्मात्मने नमः |
सुब्रह्मण्याय देवाय ब्रह्मण्याय त्रिवेदिने || 71 ||

परब्रह्मस्वरूपाय पंचब्रह्मात्मने नमः |
नमस्ते ब्रह्मशिरसे तदाऽश्वशिरसे नमः || 72 ||

अथर्वशिरसे नित्यमशनिप्रमिताय च |
नमस्ते तीक्ष्णदंष्ट्राय लोलाय ललिताय च || 73 ||

लावण्याय लवित्राय नमस्ते भासकाय च | [** लावकाय **]
लक्षणज्ञाय लक्षाय लक्षणाय नमो नमः || 74 ||

रसद्वीपाय दीप्ताय विष्णवे प्रभविष्णवे |
वृष्णिमूलाय कृष्णाय श्रीमहाविष्णवे नमः || 75 || [** दृष्णिमूलाय **]

पश्यामि त्वां महासिंहं हारिणं वनमालिनं |
किरीटिनं कुंडलिनं सर्वगं सर्वतोमुखं || 76 ||

सर्वतः पाणिपादोरुं सर्वतोऽक्षि शिरोमुखं |
सर्वेश्वरं सदातुष्टं सत्त्वस्थं समरप्रियं || 77 ||

बहुयोजनविस्तीर्णं बहुयोजनमायतं |
बहुयोजनहस्तांघ्रिं बहुयोजननासिकं || 78 ||

महारूपं महावक्त्रं महादंष्ट्रं महाभुजं |
महानादं महारौद्रं महाकायं महाबलं || 79 ||

आनाभेर्ब्रह्मणोरूपामागलाद्वैष्णवं वपुः |
आशीर्षाद्रुद्रमीशानं तदग्रे सर्वतः शिवं || 80 ||

नमोऽस्तु नारायण नारसिंह
नमोऽस्तु नारायण वीरसिंह |
नमोऽस्तु नारायण क्रूरसिंह
नमोऽस्तु नारायण दिव्यसिंह || 81 ||

नमोऽस्तु नारायण व्याघ्रसिंह
नमोऽस्तु नारायण पुच्छसिंह |
नमोऽस्तु नारायण पूर्णसिंह
नमोऽस्तु नारायण रौद्रसिंह || 82 ||

नमो नमो भीषणभद्रसिंह
नमो नमो विज्ज्वलनेत्रसिंह |
नमो नमो बृंहितभूतसिंह
नमो नमो निर्मलचित्तसिंह || 83 ||

नमो नमो निर्जितकालसिंह
नमो नमः कल्पितकल्पसिंह |
नमो नमः कामदकामसिंह
नमो नमस्ते भुवनैकसिंह || 84 ||

भविष्णुस्त्वं सहिष्णुस्त्वं भ्राजिष्णुर्विष्णुरेव च |
पृथ्वीत्वमंतरिक्षस्त्वं पर्वतारण्यमेव च || 85 ||

कलाकाष्ठादिलिप्तिस्त्वं मुहूर्तप्रहरादिकं |
अहोरात्रं त्रिसंध्यं च पक्षमासस्तुवत्सरं || 86 ||

युगादिर्युगभेदस्त्वं संयोगो युगसंधयः |
नित्यं नैमित्तिकं काम्यं महाप्रलयमेव च || 87 ||

करणं कारणं कर्ता भर्ता हर्ता हरिस्स्वराट् |
सत्कर्ता सत्कृतिर्गोप्ता सच्चिदानंदविग्रहः || 88 ||

प्राणस्त्वं प्राणिनांप्रत्यगात्म त्वं सर्वदेहिनां |
सुज्योतिस्त्वं परंज्योतिरात्मज्योतिः सनातनः || 89 ||

ज्योतिर्लोकस्वरूपस्त्वं ज्योतिर्ज्ञो ज्योतिषांपतिः |
स्वाहाकारः स्वधाकारो वषट्कारः कृपाकरः || 90 ||

हंताकारो निराकारो वेदाकारश्च शंकरः |
अकारादिक्षकारांतः ओंकारो लोककारकः || 91 ||

एकात्मा त्वमनेकात्मा चतुरात्मा चतुर्भुजः |
चतुर्मूर्तिश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्वेदमयोत्तमः || 92 ||

लोकप्रियो लोकगुरुर्लोकेशो लोकनायकः |
लोकसाक्षी लोकपतिः लोकात्मा लोकलोचनः || 93 ||

लोकाधारो बृहल्लोको लोकालोकमयो विभुः |
लोककर्ता महाकर्ता कृताकर्ता कृतागमः || 94 ||

अनादिस्त्वमनंतस्त्वमभूतोभूतविग्रहः |
स्तुतिः स्तुत्यः स्तवप्रीतः स्तोता नेता नियामकः || 95 ||

त्वं गतिस्त्वं मतिर्मह्यं पिता माता गुरुस्सखा |
सुहृदश्चात्तरूपस्त्वं त्वां विना नात्र मे गतिः || 96 ||

नमस्ते मंत्ररूपाय ह्यस्त्ररूपाय ते नमः |
बहुरूपाय रूपाय पंचरूपधराय च || 97 ||

भद्ररूपाय रूढाय योगरूपाय योगिने |
समरूपाय योगाय योगपीठस्थिताय च || 98 ||

योगगम्याय सौम्याय ध्यानगम्याय ध्यायिने |
ध्येयगम्याय धाम्ने च धामाधिपतये नमः || 99 ||

धराधराय धर्माय धारणाभिरताय च |
नमो धात्रे विधात्रे च संधात्रे च धराय च || 100 ||

दामोदराय दांताय दानवांतकराय च |
नमः संसारवैद्याय भेषजाय नमोऽस्तु ते || 101 ||

सीरध्वजाय सीराय वातायाप्रमिताय च |
सारस्वताय संसारनाशनायाक्ष मालिने || 102 ||

असिचर्मधरायैव षट्कर्मनिरताय च |
विकर्माय सुकर्माय परकर्मविघातिने || 103 ||

सुकर्मणे मन्मथाय नमो मर्माय मर्मिणे |
करिचर्मवसानाय कराळवदनाय च || 104 ||

कवये पद्मगर्भाय भूगर्भाय कृपानिधे |
ब्रह्मगर्भाय गर्भाय बृहद्गर्भाय धूर्जटे || 105 ||

नमस्ते विश्वगर्भाय श्रीगर्भाय जितारये |
नमो हिरण्यगर्भाय हिरण्यकवचाय च || 106 ||

हिरण्यवर्णदेहाय हिरण्याक्षविनाशिने |
हिरण्यकनिहंत्रे च हिरण्यनयनाय च || 107 ||

हिरण्यरेतसे तुभ्यं हिरण्यवदनाय च |
नमो हिरण्यशृंगाय निःशृंगाय च शृंगिणे || 108 ||

भैरवाय सुकेशाय भीषणायांत्रमालिने |
चंडाय तुंडमालाय नमो दंडधराय च || 109 ||

अखंडतत्त्वरूपाय कमंडलुधराय च | [** श्रीखंड **]
नमस्ते दंडसिंहाय सत्यसिंहाय ते नमः || 110 ||

नमस्ते श्वेतसिंहाय पीतसिंहाय ते नमः |
नीलसिंहाय नीलाय रक्तसिंहाय ते नमः || 111 ||

नमो हरिद्रसिंहाय धूम्रसिंहाय ते नमः |
मूलसिंहाय मूलाय बृहत्सिंहाय ते नमः || 112 ||

पातालस्थितसिंहाय नमः पर्वतवासिने |
नमो जलस्थसिंहाय ह्यंतरिक्षस्थिताय च || 113 ||

कालाग्निरुद्रसिंहाय चंडसिंहाय ते नमः |
अनंतजिह्वसिंहाय अनंतगतये नमः || 114 ||

नमोऽस्तु वीरसिंहाय बहुसिंहस्वरूपिणे |
नमो विचित्रसिंहाय नारसिंहाय ते नमः || 115 ||

अभयंकरसिंहाय नरसिंहाय ते नमः |
सप्ताब्धिमेखलायैव सप्तसामस्वरूपिणे || 116 ||

सप्तधातुस्वरूपाय सप्तच्छंदोमयाय च |
सप्तलोकांतरस्थाय सप्तस्वरमयाय च || 117 ||

सप्तार्चीरूपदंष्ट्राय सप्ताश्वरथरूपिणे |
स्वच्छाय स्वच्छरूपाय स्वच्छंदाय नमो नमः || 118 ||

श्रीवत्साय सुवेषाय श्रुतये श्रुतमूर्तये |
शुचिश्रवाय शूराय सुभोगाय सुधन्विने || 119 ||

शुभ्राय सुरनाथाय सुलभाय शुभाय च |
सुदर्शनाय सूक्ताय निरुक्ताय नमो नमः || 120 ||

सुप्रभावस्वभावाय भवाय विभवाय च |
सुशाखाय विशाखाय सुमुखाय सुखाय च || 121 ||

सुनखाय सुदंष्ट्राय सुरथाय सुधाय च |
नमः खट्वांगहस्ताय खेटमुद्गरपाणये || 122 ||

सांख्याय सुरमुख्याय प्रख्यातप्रभवाय च |
खगेंद्राय मृगेंद्राय नगेंद्राय धृवाय च || 123 ||

नागकेयूरहाराय नागेंद्रायाघमर्दिने |
नदीवासाय नागाय नानारूपधराय च || 124 ||

नागेश्वराय नग्नाय नमितायामिताय च |
नागांतकरथायैव नरनारायणाय च || 125 ||

नमो मत्स्यस्वरूपाय कच्छपाय नमो नमः |
नमो यज्ञवराहाय श्री नृसिंहाय ते नमः || 126 ||

विक्रमाक्रांतलोकाय वामनाय महौजसे |
नमो भार्गवरामाय रावणांतकराय च || 127 ||

नमस्ते बलरामाय कंसप्रध्वंसकारिणे |
बुद्धाय बुद्धरूपाय तीक्ष्णरूपाय कल्किने || 128 ||

आत्रेयायाग्निनेत्राय कपिलाय द्विजाय च |
क्षेत्राय पशुपालाय पशुवक्त्राय ते नमः || 129 ||

गृहस्थाय वनस्थाय यतये ब्रह्मचारिणे |
स्वर्गापवर्गदात्रे च तद्भोक्त्रे च मुमुक्षवे || 130 ||

सालग्रामनिवासाय क्षीराब्धिनिलयाय च |
श्रीशैलाद्रिनिवासाय शैलवासाय ते नमः || 131 ||

योगिहृत्पद्मवासाय महाहंसाय ते नमः |
गुहावासाय गुह्याय गुप्ताय गुरवे नमः || 132 ||

नमो मूलाधिवासाय नीलवस्त्रधराय च |
पीतवस्त्रधरायैव रक्तवस्त्रधराय च || 133 ||

रक्तमालाविभूषाय रक्तगंधानुलेपिने |
धुरंधराय धूर्ताय दुर्गमाय धुराय च || 134 ||

दुर्मदाय दुरंताय दुर्धराय नमो नमः |
दुर्निरीक्ष्याय दीप्ताय दुर्दर्शाय द्रुमाय च || 135 ||

दुर्भेदाय दुराशाय दुर्लभाय नमो नमः |
दृप्ताय दीप्तवक्त्राय उधृर्ताय नमो नमः || 136 ||

उन्मत्ताय प्रमत्ताय नमो दैत्यारये नमः |
रसज्ञाय रसेशाय ह्याकर्णनयनाय च || 137 ||

वंद्याय परिवेषाय रथ्याय रसिकाय च |
ऊर्ध्वास्यायोर्ध्वदेहाय नमस्ते चोर्ध्वरेतसे || 138 ||

पद्मप्रध्वंसिकांताय शंखचक्रधराय च |
गदापद्मधरायैव पंचबाणधराय च || 139 ||

कामेश्वराय कामाय कामरूपाय कामिने |
नमः कामविहाराय कामरूपधराय च || 140 ||

सोमसूर्याग्निनेत्राय सोमपाय नमो नमः |
नमः सोमाय वामाय वामदेवाय ते नमः || 141 ||

सामस्वराय सौम्याय भक्तिगम्याय ते नमः |
कूष्मांडगणनाथाय सर्वश्रेयस्कराय च || 142 ||

भीष्माय भीकरायैव भीम विक्रमणाय च |
मृगग्रीवाय जीवाय जिताय जितकाशिने || 143 ||

जटिने जामदग्न्याय नमस्ते जातवेदसे |
जपाकुसुमवर्णाय जप्याय जपिताय च || 144 ||

जरायुजायांडजाय स्वेदजायोद्भिदाय च |
जनार्दनाय रामाय जाह्नवीजनकाय च || 145 ||

जराजन्मविदूराय प्रद्युम्नाय प्रबोधिने |
रौद्रजिह्वाय रुद्राय वीरभद्राय ते नमः || 146 ||

चिद्रूपाय समुद्राय कद्रुद्राय प्रचेतसे |
इंद्रियायेंद्रियज्ञाय नम इंद्रानुजाय च || 147 ||

अतींद्रियाय सांद्राय इंदिरापतये नमः |
ईशानाय च हीड्याय हीप्सिताय त्विनाय च || 148 ||

व्योमात्मने च व्योम्ने च नमस्ते व्योमकेशिने |
व्योमोद्धराय च व्योमवक्त्रायासुरघातिने || 149 ||

नमस्ते व्योमदंष्ट्राय व्योमवासाय ते नमः |
सुकुमाराय माराय शिंशुमाराय ते नमः || 150 ||

विश्वाय विश्वरूपाय नमो विश्वात्मकाय च |
ज्ञानात्मकाय ज्ञानाय विश्वेशाय परात्मने || 151 ||

एकात्मने नमस्तुभ्यं नमस्ते द्वादशात्मने |
चतुर्विंशतिरूपाय पंचविंशतिमूर्तये || 152 ||

षड्विंशकात्मने नित्यं सप्तविंशतिकात्मने |
धर्मार्थकाममोक्षाय विमुक्ताय नमो नमः || 153 ||

भावशुद्धाय साध्याय सिद्धाय शरभाय च |
प्रबोधाय सुबोधाय नमो बुद्धिप्रदाय च || 154 ||

स्निग्धाय च विदग्धाय मुग्धाय मुनये नमः |
प्रियश्रवाय श्राव्याय सुश्रवाय श्रवाय च || 155 ||

ग्रहेशाय महेशाय ब्रह्मेशाय नमो नमः |
श्रीधराय सुतीर्थाय हयग्रीवाय ते नमः || 156 ||

उग्राय चोग्रवेगाय उग्रकर्मरताय च |
उग्रनेत्राय व्यग्राय समग्रगुणशालिने || 157 ||

बालग्रहविनाशाय पिशाचग्रहघातिने |
दुष्टग्रहनिहंत्रे च निग्रहानुग्रहाय च || 158 ||

वृषध्वजाय वृष्ण्याय वृषभाय वृषाय च |
उग्रश्रवाय शांताय नमः श्रुतिधराय च || 159 ||

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते मधुसूदन |
नमस्ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते दुरितक्षय || 160 ||

नमस्ते करुणासिंधो नमस्ते समितिंजय |
नमस्ते नारसिंहाय नमस्ते गरुडध्वज || 161 ||

यज्ञध्वज नमस्तेऽस्तु कालध्वज जयध्वज |
अग्निनेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते ह्यमरप्रिय || 162 ||

सिंहनेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते भक्तवत्सल |
धर्मनेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते करुणाकर || 163 ||

पुण्यनेत्र नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽभीष्टदायक |
नमो नमस्ते जयसिंहरूप नमो नमस्ते नरसिंहरूप || 164 ||

नमो नमस्ते गुरुसिंहरूप नमो नमस्ते रणसिंहरूप |
नमो नमस्ते गुरुसिंहरूप नमो नमस्ते लघुसिंहरूप || 165 ||

ब्रह्म उवाच –
उद्वृत्तं गर्वितं दैत्यं निहत्याजौ सुरद्विषं |
देवकार्यं महत्कृत्वा गर्जसे स्वात्मतेजसा || 166 ||

अतिरौद्रमिदं रूपं दुस्सहं दुरतिक्रमं |
दृष्ट्वैता देवताः सर्वाः शंकितास्त्वामुपागताः || 167 ||

एतान्पश्य महेशानं ब्रह्माणं मां शचीपतिं |
दिक्पालान् द्वादशादित्यान् रुद्रानुरगराक्षसान् || 168 ||

सर्वान् ऋषिगणान्सप्तमातृर्गौरीं सरस्वतीं |
लक्ष्मीं नदीश्च तीर्थानि रतिं भूतगाणनपि || 169 ||

प्रसीद त्वं महासिंह ह्युग्रभावमिमं त्यज |
प्रकृतिस्थो भव त्वं हि शांतभावं च धारय || 170 ||

इत्युक्त्वा दंडवद्भूमौ पपात स पितामहः |
प्रसीद त्वं प्रसीद त्वं प्रसीदेति पुनः पुनः || 171 ||

मार्कंडेय उवाच-
दृष्ट्वा तु देवताः सर्वाः श्रुत्वा तां ब्रह्मणो गिरं |
स्तोत्रेणानेन संतुष्टः सौम्यभावमधारयत् || 172 ||

अब्रवीन्नारसिंहस्तान् वीक्ष्य सर्वान्सुरोत्तमान् |
संत्रस्तान् भयसंविग्नान् शरणं समुपागतान् || 173 ||

श्रीनृसिंह उवाच-
भो भो देवगणाः सर्वे पितामहपुरोगमाः |
शृणुध्वं मम वाक्यं च भवंतु विगतज्वराः || 174 ||

यद्धितं भवतां मानं तत्करिष्यामि सांप्रतं |
सुरा नामसहस्रं मे त्रिसंध्यं यः पठेत् शुचिः || 175 ||

शृणोति श्रावयति वा पूजां ते भक्तिसंयुतः |
सर्वान्कामानवाप्नोति जीवेच्च शरदां शतं || 176 ||

यो नामभिर्नृसिंहाद्यैरर्चयेत्क्रमशो मम |
सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु यत्फलं || 177 ||

सर्वपूजासु यत्प्रोक्तं तत्सर्वं लभते नरः |
जातिस्मरत्वं लभते ब्रह्मज्ञानं सनातनं || 178 ||

सर्वपापविनिर्मुक्तः तद्विष्णोः परमं पदं |
यो नामकवचं बध्वा विचरेद्विगतज्वरः || 179 ||

भूतभेतालकूष्मांड पिशाचब्रह्मराक्षसाः |
शाकिनीडाकिनीज्येष्ठा सिनी बालग्रहादयः || 180 ||

दुष्टग्रहाश्च नश्यंति यक्षराक्षसपन्नगाः |
ये च संध्याग्रहाः सर्वे चंडालग्रहसंज्ञिकाः || 181 ||

निशाचरग्रहाः सर्वे प्रणश्यंति च दूरतः |
कुक्षिरोगश्च हृद्रोगः शूरापस्मार एव च || 182 ||

एकाहिकं द्व्याहिकं च चातुर्धिकमहाज्वरं |
अथ यो व्याधयश्चैव रोगा रोगाधिदेवताः || 183 ||

शीघ्रं नश्यंति ते सर्वे नृसिंहस्मरणाकुलाः |
राजानो दासतां यांति शत्रवो यांति मित्रतां || 184 ||

जलानि स्थलतां यांति वह्नयो यांति शीततां |
विषान्यमृततां यांति नृसिंहस्मरणात्सुराः || 185 ||

राज्यकामो लभेद्राज्यं धनकामो लभेद्धनं |
विद्याकामो लभेद्विद्यां बद्धो मुच्येत बंधनात् || 186 ||

व्यालव्याघ्रभयं नास्ति चोरसर्पादिकं तथा |
अनुकूला भवेद्भार्या लोकैश्च प्रतिपूज्यते || 187 ||

सुपुत्रां धनधान्यं च पशूंश्च विविधानपि |
एतत्सर्वमवाप्नोति नृसिंहस्य प्रसादतः || 188 ||

जलसंतरणे चैव पर्वतारोहणे तथा |
वनेऽपि विचिरन्मर्त्यो व्याघ्रादि विषमे पथि || 189 ||

बिलप्रवेशे पाताले नारसिंहमनुस्मरेत् |
ब्रह्मघ्नश्च पशुघ्नश्च भ्रूणहा गुरुतल्पकः || 190 ||

मुच्यते सर्वपापेभ्यः कृतघ्न स्त्रीविघातकः |
वेदानां दूषकश्चापि मातापितृ विनिंदकः || 191 ||

असत्यस्तु सदा यज्ञनिंदको लोकनिंदकः |
स्मृत्वा सकृन्नृसिंहं तु मुच्यते सर्वकिल्बषैः || 192 ||

बहुनात्र किमुक्तेन स्मृत्वा तं शुद्धमानसः |
यत्र यत्र चरेन्मर्त्यः नृसिंहस्तत्र गच्छति || 193 ||

गच्छन् तिष्ठन् श्वपन्मर्त्यः जाग्रच्छापि प्रसन्नपि |
नृसिंहेति नृसिंहेति नृसिंहेति सदा स्मरन् || 194 ||

पुमान्नलिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विंदति |
नारी सुभगतावेति सौभाग्यं च सुरूपतां || 195 ||

भर्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं च विंदति |
न सपत्नीं च जन्मांते सम्यक् ज्ञानी द्विजो भवेत् || 196 ||

भूमिप्रदक्षिणान्मर्त्यो यत्फलं लभते चिरात् |
तत्फलं लभते नारसिंहमूर्तिप्रदक्षिणात् || 197 ||

मार्कंडेय उवाच –
इत्युक्त्वा देवदेवेशो लक्ष्मीमालिंग्य लीलया |
प्रह्लादस्याभिषेकस्तु ब्रह्मणे चोपदिष्टवान् || 198 ||

श्रीशैलस्य प्रदेशे तु लोकानां हितकाम्यया |
स्वरूपं स्थापयामास प्रकृतिस्थोऽभवत्तदा || 199 ||

ब्रह्मापि दैत्यराजानं प्रह्लादमभिषिच्य च |
दैवतैः सह सुप्रीतो ह्यात्मलोकं ययौ स्वयं || 200 ||

हिरण्यकशिपोर्भीत्या प्रपलाय शचीपतिः |
स्वर्गराज्यपरिभ्रष्टो युगानामेकसप्ततिः || 201 ||

नृसिंहेन हते दैत्ये तथा स्वर्गमवाप सः |
दिक्पालकाश्च संप्राप्तस्त्वं स्वस्थानमनुत्तमं || 202 ||

धर्मे मतिः समस्तानां जनानामभवत्तदा |
एतन्नामसहस्रस्तु ब्रह्मणा निर्मितं पुरा || 203 ||

पुत्रानध्यापयामास सनकादीन्महामुनीन् |
ऊचुस्ते तद्गतः सर्वे लोकानां हितकाम्यया || 204 ||

देवता ऋषयः सिद्धा यक्षविद्याधरोरगाः |
गंधर्वाश्च मनुष्याश्च इहामुत्रफलैषिणः || 205 ||

अस्य स्तोत्रस्य पाठनात्विशुद्ध मनसोभवन् |
सनत्कुमारात्संप्राप्तौ भरद्वाजो मुनिस्तदा || 206 ||

तस्मादांगीरसः प्राप्तस्तस्मात्प्राप्तो महामतिः |
जग्राह भार्गवस्तस्मादग्निमित्राय सोऽब्रवीत् || 207 ||

जैगीषव्याय सप्राह ऋतुकर्णाय संयमी |
विष्णुमित्राय सप्राह सोऽब्रवीच्छ्यवनाय च || 208 ||

तस्मादवाप शांडिल्यो गर्गाय प्राह वै मुनिः |
कृतुंजयाय स प्राह सोऽपि बोधायनाय च || 209 ||

क्रमात्स विष्णवे प्राह स प्राहोद्धामकुक्षये |
सिंह तेजास्तु तस्माच्च शिवप्रियायनै ददौ || 212 ||

उपदिष्टोस्म्यहं तस्मादिदं नामसहस्रकं |
तत्प्रसादादमृत्युर्मे यस्मात्कस्माद्भयं न च || 213 ||

मया च कथितं नारसिंहस्तोत्रमिदं तव |
त्वं हि नित्यं शुचिर्भूत्वा तमाराधय शाश्वतं || 214 ||

सर्वभूताश्रयं देवं नृसिंहं भक्तवत्सलं |
पूजयित्वा स्तवं जप्त्वा हुत्वा निश्चलमानसः || 215 ||

प्राप्यसे महतीं सिद्धिं सर्वांकामान्नरोत्तम |
अयमेव परोधर्मस्त्विदमेव परं तपः || 216 ||

इदमेव परं ज्ञानमिदमेव महद्व्रतं |
अयमेव सदाचारो ह्ययमेव महामखः || 217 ||

इदमेव त्रयो वेदाः शास्त्राण्यागमानि च |
नृसिंहमंत्रादन्यत्र वैदिकस्तु न विद्यते || 218 ||

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् |
कथितं नारसिंहस्य चरितं पापनाशनं || 219 ||

सर्वमंत्रमयं तापत्रयोपशमनं परं |
सर्वार्थसाधनं दिव्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि || 220 ||

ॐ नम इति श्रीनृसिंहपुराणे स्तोत्ररत्नाकरे श्रीनरसिंहप्रादुर्भावे आपदुद्धार घोर वीर लक्ष्मीनृसिंह दिव्य सहस्रनामस्तोत्रमंत्रराजः सर्वार्थसाधनं नाम द्विशततमोध्यायः समाप्तः ||